विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण : परिदृश्य

संगोष्ठी समग्र

संपादक

श्रीश चन्द्र जैसवाल

यूरोपीय संगोष्ठी, वय्याडोलिड, स्पेन

15-17 मार्च 2012

Universidad de Valladolid

CEA
Centro de Estudios de Asia
Universidad de Valladolid

सत्यमेव जयते
Ministry of External Affairs
India

कासाइंदिया
casa de la India

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

1. नया शतक नई दिशा : भारतीय भाषाओं के शिक्षण की समस्याएं और संभावनाएं – उदय नारायण सिंह 1

प्रथम शैक्षिक सत्र
पश्चिमी तथा मध्य यूरोप में हिन्दी शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य

2. पुर्तगाल में हिन्दी अध्यापन का एक छोटा–सा इतिहास – अफज़ाल अहमद 9
3. विएना में हिन्दी : इतिहास और वर्तमान – अलका आत्रेय चूडाल 11
4. तोरीनो विश्वविद्यालय में भारत विद्या तथा हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन – आलेसांद्रा कोंसोलारो 14
5. बोन विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्ययन–अध्यापन–यूस्तीना कुरोव्सका 20
6. हिन्दी शिक्षण–मानक हिन्दी और/या प्रामाणिक हिन्दी? – महेंद्र किशोर वर्मा 23
7. हिन्दी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएं और समाधान – रमेश चन्द्र शर्मा 31

द्वितीय शैक्षिक सत्र
भाषा प्रौद्योगिकी और हिन्दी शिक्षण में उसका अनुप्रयोग

8. भारतीय भाषाओं की ठगी – ऐश्वर्ज कुमार 34
9. हिन्दी के टी.वी. चैनलों के समाचार पर आधारित पाठ्य पुस्तकें – गेनादी श्लोम्पेर 38
10. अमरीका में हिन्दी शिक्षा – हर्मन वान ऑल्फ़न 43
11. भाषा प्रकार्यों के अधुनातन सन्दर्भ और हिन्दी – कविता वाचक्नवी 46

तृतीय शैक्षिक सत्र
शेष यूरोप में हिन्दी शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य

12. स्लोवेनिया : हिन्दी शिक्षण – समस्याएं और संभावनाएं – अरुण प्रकाश मिश्रा 52
13. क्रोएशिया में हिन्दी अध्ययन–अध्यापन : वर्तमान पर्रिपेक्ष्य – बिल्जाना ज़निक 55
14. वारसा विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्ययन–अध्यापन–वर्तमान परिदृश्य – दानूता स्ताशिक 61
15. इंडोलोजी, दक्षिण एशियाई अध्ययन और हिन्दी भाषा और साहित्य : उप्साला (स्वीडन) के परिप्रेक्ष्य में – हैंज़ वेर्नर वैस्लर 64
16. रूस में हिन्दी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएं और समाधान – इंदिरा गाज़िएवा 68
17. रूस में हिन्दी पढ़ाने का इतिहास तथा आधुनिक समस्याएं – लुदमीला खोखलोवा 73
18. रोमानिया में हिन्दी अध्ययन–अध्यापन (भारतीय संस्कृति के अध्ययन और संस्कृत की परंपरा के संक्षिप्त विवरण के साथ) – सबीना पोपर्लान 77
19. विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण : एक परिदृश्य – विजया सती 82

चतुर्थ शैक्षिक सत्र

हिन्दी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएं और समाधान

20. यूरोप में हिन्दी के अध्ययन की विस्तृत समस्याएं और उनका समाधान – मोहन कान्त गौतम 86
21. भाषा शिक्षण एवं नवप्रवर्तन – जगन्नाथन वी.आर. 90
22. अधिगम अथवा अधिग्रहण प्रक्रिया : यूरोपीय हिन्दी अध्येता भाषा के संदर्भ में – वैश्ना नारंग 93
23. हिन्दी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएं और समाधान – कैलाश नारायण तिवारी 100
24. हिन्दी साहित्य शिक्षण के लिए आलोचना मानदंडों की मुश्किलें – नवीन चंद्र लोहनी 103
25. यूरोप में हिन्दी शिक्षण : समस्याएं और समाधान – एस.वी.एस.एस. नारायण राजू 106
26. हिन्दी शिक्षण के सबंध में विश्व हिन्दी दिवस के महत्त्व के बारे में कुछ विचार – तत्याना औरन्स्कया 108
27. विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की चुनौतियां – शिव कुमार सिंह 111
28. हिन्दी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएं और समाधान – दीप्ती गोलानी 116

समापन सत्र

29. यूरोपीय हिन्दी संगोष्ठी की रिपोर्ट – श्रीश चन्द्र जैसवाल 118

विश्व भाषा हिन्दी के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाएं

30. केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा – सौजन्य : अशोक चक्रधर 123
31. महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा – सौजन्य : विभूति नारायण राय 129
32. विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस – सौजन्य : पूनम जुनेजा 131

संगोष्ठी के प्रतिभागियों के संक्षिप्त जीवन वृत्त 133

यूरोपीय हिंदी संगोष्ठी 2012 – चित्रावली 167

तोरीनो विश्वविद्यालय में भारत–विद्या तथा हिंदी का अध्ययन–अध्यापन

– आलेसांद्रा कोन्सोलारो

इटली में प्रारंभिक अध्ययन

इटली में भारत की संस्कृति की ओर जो रुचि है वह एक नई बात नहीं है। मध्यकाल में 1240 ई. में जोवन्नी दा कपुआ (Giovanni da Capua) ने पंचतंत्र का पहला लैटिन अनुवाद किया और उसके माध्यम से फ्रेन्चेस्को दोनी (Francesco Doni) और अगनोलो फ़िरेंज़ुओला (Agnolo Firenzuola) की लोकप्रिय कहानी के रूप में मध्यकालीन एवं पुनर्जागरण काल में उपदेशात्मक साहित्य के रूप में इटली पहुंचा। 16–18वीं शताब्दी के दौरान इटली में भारत की जानकारी यात्रियों के द्वारा प्राप्त हुई। 1449 ई. में निकोलो दे कोंती (Niccolo de Conti) के यात्रावृत्तान्त रचित हुए। निकोलो दे कोंती का भारत प्रेम इतना था कि उन्होंने एक भारतीय नारी से शादी की और भारत में ही अपना परिवार बसाया। भारत संबंधित परंपरा में बहुत से ग्रन्थ स्मरणीय हैं। लुदोवीको दा वर्तेमा (Ludovico da Vartema) का उपाख्यान 1510 ई. में प्रकाशित हुआ। 1585 ई. में फ़िलिप्पो सस्सेत्ती (Filippo Sassetti) के भारत से पत्र छपे। उन्होंने संस्कृत भाषा सीखकर यूरोप में भाषावैज्ञानिक अध्ययन का प्रारंभ किया, इस तरह से वे भारोपीय अध्ययन के मार्ग दर्शक हुए। 17वीं सदी में पिएत्रो देल्ला वाल्ले (Pietro della Valle) ने भारत से बहुत दिलचस्प पत्र भेजे, जिनमें कोलकाता से गोआ तक भारत के परिभ्रमण का वर्णन किया गया है। निक्कोलो मन्नुच्ची (Niccolo Mannucci) ने 1712 ई. में मुग़लों का इतिहास लिखा, जिसमें शाहजहां एवं औरंगज़ेब के शासन का विवरण है।

तोरीनो में भारत–विद्या का प्रारंभिक अध्ययन

1404 ई. में तोरीनो विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। राजा कर्लो एमनुएले प्रथम के शासन के दौरान (1580–1630) पूर्वी पुस्तकालय स्थापित हुआ और पूर्वी अध्ययन शुरू हुआ। 1861 ई. में इटली संयुक्त राज्य स्थापित हुआ। 19वीं शताब्दी में प्राचीन मिस्र, यहूदी और अरबी भाषाओं एवं सभ्यताओं के अलावा भारतीय उपमहाद्वीप की पुरानी भाषाओं एवं संस्कृतियों में रुचि बढ़ गई। 1852 ई. में महन्त गास्परे गोर्रेज़ियो (Gaspare Gorresio, 1808-1891) ने तोरीनो विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा और साहित्य शिक्षण शुरू किया। उन्होंने वाल्मीकि रामायण का समीक्षात्मक संस्करण (1843–1850) और इतालवी अनुवाद (1847–1858) किया। जबकि उन दिनों ज़्यादातर विद्वानों की रुचि भारोपीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर थी, फिर भी गोर्रेज़ियो ऐतिहासिक, दार्शनिक, मानविकीय, धार्मिक और न्यायिक पहलुओं में पूरी भारतीय सभ्यता का अध्ययन करना चाहता था। गोर्रेज़ियो के समकालीन जियोवान्नी फ़्लेकिया (Giovanni Flechia, 1811-1892) ने इतालवी भाषा में पहला संस्कृत व्याकरण लिखा (1856)। वे भाषाविज्ञानी थे, फ़िर भी उन्होंने इतिहास का अध्ययन भी किया और 1862 में उनका पूर्वी भारत का इतिहास (Storia delle Indie orientali) छपा।

1861 से बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक तोरीनो के इंडोलॉजी विभाग से पारंपरिक शिक्षा लेकर बहुत से विद्वान, राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट हुए, जैसे जाकोमो लिग्नाना (Giacomo Lignana, 1830-1914), जिन्होंने नापोली और रोम में पढ़ाया, मिकेले केर्बाकेर (Michele Kerbaker, 1835-1914), जिन्होंने नापोली में अध्यापन किया; आंजेलो दे गूबेर्नातीस (Angelo De Gubernatis, 1840-1913), जो फ़्लोरेन्स और रोम में प्राध्यापक बने; पियेत्रो मेर्लो (Pietro Merlo, 1850-1905) जिन्होंने नापोली और पविया के विश्वविद्यालयों में पढ़ाया और ओरेस्ते नज़ारी (Oreste Nazari), जो पलेर्मो में प्राध्यापक बने।

तोरीनो में इतालो पिज़्ज़ी (Italo Pizzi,1849-1920) ने संस्कृत भाषा का अध्ययन–अध्यापन ज़ारी रखा। उन्होंने संस्कृत व्याकरण एवं शब्दकोश लिखा, पंचतंत्र का इतालवी अनुवाद किया और तोरीनो विश्वविद्यालय में फ़ारसी भाषा की पढ़ाई शुरू की। उनके क्रमानुयायी मरियो वल्लाउरी (Mario Vallauri, 1887-1964) हुए, जो उनके शिष्य थे। इटली में भारतीय विद्या के ज्ञान का विस्तार करने में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्राचीन भारतीय विज्ञान, धर्म, कानून और राजनीति विज्ञान, पौराणिक समीक्षा और संस्कृत नाटक जैसे नए क्षेत्रों पर ध्यान दिया, जिनमें तब तक कम अनुसंधान हुआ था।

तोरीनो में भारत–विद्या का आधुनिक अध्ययन

मरियो वल्लाउरी के प्रमुख शिष्य ओस्कर बोत्तो (Oscar Botto, 1922-2008) और कार्लो देल्ला काज़ा (Carlo Della Casa, जन्म 1925) थे। इन्होंने पलेर्मो और मिलानो में पढ़ाया और आजकल संस्कृत एमेरिटस प्राध्यापक हैं। इनकी रुचि ख़ासतौर पर जैन धर्म एवं उपनिषद् पर केंद्रित है। ओस्कर बोत्तो ने तो तोरीनो विश्वविद्यालय में भारत–अध्ययन के नियमित पाठ्यक्रम की स्थापना की। उन्होंने 1962 से 1974 तक भारतीय धर्म एवं दर्शन पढ़ाया और 1962 से 1992 तक इंडोलॉजी का अध्यापन किया। उन्होंने बौद्ध धर्म, संस्कृत साहित्य एवं महाकाव्य, अर्थशास्त्र, कथा एवं कविता का अध्ययन किया और मुख्य संपादक के रूप में कुछ ग्रंथों का प्रकाशन किया, जैसे पूर्वी साहित्यों का इतिहास (Storia delle letterature d'Oriente), धर्मों के गौरव ग्रन्थ (I classici delle religioni), संस्कृत इतालवी कोश (Vocabolario sanscrito italiano)। उन्होंने 1963 में इंडोलॉजी इंस्टीट्यूट (Istituto di Indologia) स्थापित किया जो 1989 में पूर्वी अध्ययन विभाग (Dipartimento di Orientalistica) बन गया।

ओस्कर बोत्तो के प्रमुख शिष्य स्तेफ़नो पियानो (Stefano Piano, जन्म 1940) थे। उनका अध्ययन संस्कृत पौराणिक साहित्य और धर्मों के इतिहास पर केंद्रित है। उनके ग्रन्थों में से निम्नलिखित पुस्तकें चर्चित हैं: योग का विश्वकोश (Enciclopedia dello Yoga), सनातन धर्म (Sanātana-dharma. Un incontro con l'<<induismo>>), भारत के प्राचीन साहित्य (Le letterature dell'India) और प्राचीन हिन्दू धर्म (Hinduismo antico. Dalle origini vediche ai Purāṇa)। उन्होंने भगवद्गीता का एक प्रामाणिक इतालवी अनुवाद भी किया।

1974 से 2010 तक तोरीनो विश्वविद्यालय में भारतीय धर्म एवं दर्शन का अध्यापन मरियो पियांतेल्ली (Mario Piantelli, जन्म 1943) द्वारा किया गया। उन्होंने भारत में संस्कृत सीखकर अपना अध्ययन वेदांत दर्शन पर केंद्रित रखा। उन्होंने ईश्वरगीता और श्रीशंकराचार्यचरितम् का इतालवी अनुवाद किया एवं बहुत लेख और ग्रंथ लिखे, जैसे शंकर और केवलाद्वैतवाद (Śaṅkara e il kevalādvatavāda)।

आजकल तोरीनो विश्वविद्यालय में इंडोलॉजी और संस्कृत भाषा के प्राध्यापक आल्बेर्तो पेलिस्सेरो (Alberto Pelissero, जन्म 1960) हैं। उनका अनुसंधान अलग–अलग परंपराओं में मुक्तिशास्त्र, जैसे कश्मीर शैवदर्शन (Il riso e la pula. Vie di salvezza nello Sivaismo del Kaśmīr) और केवलाद्वैतवेदांत (Strumenti per lo studio dell' Āgamaśāstravivaraṇa) पर केंद्रित है।

अन्तोनेल्ला कोम्बा (Antonella Comba, जन्म 1955) भारतीय धर्म एवं दर्शन पढ़ाती हैं। वे बौद्ध दर्शन का अध्ययन करती हैं। उन्होंने बुद्धघोसा के विसुद्धिमग्ग का इतालवी अनुवाद किया।

तोरीनो में हिंदी अध्ययन

इटली में हिंदी भाषा एवं साहित्य शिक्षण की परंपरा ज़्यादा पुरानी नहीं है। बीसवीं सदी में जियुज़ेप्पे तुच्ची (Giuseppe Tucci) द्वारा 1933 में स्थापित इसिमेओ (IsMeo -Istituto Italiano per il Medio e l'Estremo Oriente) में हिंदी भाषा का शिक्षण शुरू हुआ, लेकिन विश्वविद्यालय के स्तर पर सातवें दशक में ही हिंदी का अध्यापन आरंभ हुआ, जब वेनिस (Venezia) में लक्ष्मण प्रसाद मिश्रा हिंदी सिखाने लगे। तोरीनो विश्वविद्यालय में स्तेफ़नो पियानो ने 1971 में हिंदी शिक्षण के नियमित पाठ्यक्रम की स्थापना की। उन्होंने कुछ सिक्खों के भजन (Canti religiosi dei Sikh) का अनुवाद भी किया है और नई कहानी का समीक्षात्मक अध्ययन एवं अनुवाद किया है।

उनकी विद्यार्थी पिनुच्चिया कराक्की (Pinuccia Caracchi, जन्म 1952) ने 1985 से तोरीनो विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण जारी रखा। आजकल वे एशियाई एवं अफ़्रीकी भाषाओं एवं सभ्यताओं के शैक्षिक पाठ्यक्रम की अध्यक्षा हैं। भाषा और साहित्य के अलावा उनकी रुचि धार्मिक अध्ययन में है: उनका मुख्य अनुसंधान क्षेत्र मध्यकालीन हिंदीभाषिक भक्ति साहित्य है, खासतौर पर सन्त साहित्य (Ramananda e lo yoga dei Sant, Vita di Ramananda)। उन्होंने पहला इतालवी भाषिक हिंदी व्याकरण लिखा (Grammatica hindi) और बीसवीं सदी की अनेक छोटी कहानियों का अनुवाद किया (Rocconti hindi del Novecento, प्रेमचंद का सेवा मार्ग)।

2002 से अलेसांद्रा कोंसोलारो (Alessandra Consolaro, जन्म 1962) भी हिंदी भाषा और साहित्य सिखाती हैं। उनका अनुसंधान क्षेत्र अंतर्विषयक है: दक्षिण एशियाई 20वीं शताब्दी का इतिहास (राष्ट्रवाद, राजनैतिक स्वतंत्रता और भाषा संबंधी नीति); औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक सिद्धांत (La prosa nella cultura letteraria hindī dell'India coloniale e postcoloniale); स्त्रीवादी सिद्धांत; राष्ट्रवादी आंदोलन और आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य का मानकीकरण (Madre India e la Parola); समकालीन हिंदी कहानी और उपन्यास: समीक्षात्मक अध्ययन और अनुवाद (Constructed religious feelings and communal identities in Hamārā Śahar us baras by Gītānjali Śrī, Poesia urbana: Rājés Jósī e Bhopal)।

पूर्वी अध्ययन विभाग से मानविकी अध्ययन विभाग तक

1989 में पूर्वी अध्ययन विभाग स्थापित हुआ, जो 2011 तक चलता रहा। इस विभाग में पुरानी परंपरा तथा समकालीन अध्ययन होता था। भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र के साथ आधुनिक संस्कृति को महत्व दिया गया और भारतीय, चीनी, जापानी, अरबी, यहूदी, सामी, अफ़्रीकी और अंग्रेज़ी अनुभागों का उद्देश्य नज़दीकी और सुदूर पूर्वी सभ्यताओं से यूरोप का सम्पर्क स्थापित करना था।

पूर्वी अध्ययन विभाग (Department of Oriental Studies Torino) द्वारा "दोस्त" नामक शृंखला प्रकाशित की गई, इसके अनेक भाग हैं, जैसे आलोचनात्मक अध्ययन, विनिबंध, शिक्षा–संबंधी लेख और पुरालेख[1]। स्तेफ़नो पियानो द्वारा संपादित एक और शृंखला थी, "अज़ियातिका" (Asiatica)[2]। इन शृंखलाओं के प्रकाशन में विभाग के सब सदस्यों ने सहयोग दिया है और इसके अंतर्गत अनेक चर्चित ग्रंथ छपे हैं। एन्ना विश्वविद्यालय के सहकार्य में एक ऑनलाइन पत्रिका प्रकाशित होती है, "कारवां" (Kervan, www.kervan.unito.it), जो अफ़्रीकी–एशियाई अध्ययन पर केंद्रित है।

पूर्वी अध्ययन विभाग का पुस्तकालय उत्कृष्ट और अनमोल है। वह इंडोलॉजी विभाग के साथ 1963 में स्थापित हुआ। इसमें भारतीय, चीनी, जापानी, अरबी एवं यहूदी अनुभाग हैं। कुल मिलाकर पूरा संचयन 40000 किताबों का है। पुस्तकालय में एशियाई सिनेमा अनुभाग भी है, जिसमें पुस्तकों के अलावा फ़िल्म का संचयन भी है। इसमें 300 से ऊपर चीनी, जापानी और भारतीय चलचित्रकला के डीवीडी हैं। नए कानून के अनुसार, जनवरी 1, 2012 से मानविकी अध्ययन विभाग बन गया, जिसमें पूर्वी अध्ययन विभाग का विलय हो गया। आजकल मानविकी अध्ययन विभाग के भारतीय अनुभाग के सदस्य निम्नलिखित हैं:

प्रोफ़ेसर पिनुच्चिया कराक्की (हिंदी मध्यकालीन भाषा और साहित्य, भारतीय संस्कृति)

अनुसंधानकर्त्ता और स्थाई सहायक प्राध्यापक आलेस्सांद्रा कोंसोलारो (हिंदी आधुनिक भाषा और साहित्य, महिलाओं का अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन)

श्री रूपलाल संधू (हिंदी भाषा शिक्षक)

अस्थायी सहायक प्राध्यापक अन्द्रेआ द्रोक्को (Andrea Drocco, जन्म 1973) (दक्षिण एशियाई भाषाविज्ञान)

---

[1]**DOST Critical Studies**:
Alessandro Monti, Sara Bianchi, Flavio Gallucci, *Roads to Knowledge: Hermeneutical and Lexical Probes*, 2007
Alessandro Monti, *Across/Over: Colonial Agencies/Rewriting the texts*, 2007
Essays in honour of Fabrizio Pennacchietti, संपादक Alessandro Monti, 2008
Atti della prima giornata di studi metodologici di Indologia, संपादक Alberto Pelissero, 2008
«L'odore dell'India». Strutture e narrazioni, संपादक Giuliano Soria, Stefania Albis, Federica Musso, Alessandro Monti, 2008
Connecting to India, संपादक Alessandro Monti, 2009
Eastern perspectives: from Qumran to Bollywood, संपादक Alessandro Monti, 2009
Scritture e interpretazioni, संपादक Alessandro Monti, Flavio Gallucci, 2010
Tirthayatra. Essays in Honour of Stefano Piano, संपादक Pinuccia Caracchi, Antonella S. Comba, Alessandra Consolaro e Alberto Pelissero, 2010
Voci e conflitti, संपादक Alessandra Consolaro, Alessandro Monti, Flavio Gallucci
Il sacrificio alla base della costruzione di identità culturale indiana: due studi specifici, संपादक Pietro Chierichetti e Alberto Pelissero
Monographies:
Monica De Togni, *Governo locale e socializzazione politica in Cina*, 2007
Luca Pisano, *Voci di donne*, 2007
Andrea Drocco, *L'ergatività in Hindi. Studio diacronico del processo di diffusione della posposizione "ne"*, 2008
Barbara Leonesi, *Spartaco a Roma e nel celeste impero*, 2009
Archives:
Orientalist at Work. Some Exerpts From Paul E. Kahle's Papers, संपादक Roberto Tottoli, 2009
Chalta hai: così va il mondo. Bollywood specchio dell'India, संपादक Alessandro Monti, Irma Piovano, Aelfric Bianchi, 2010
Business India, संपादक Alessandro Monti e Flavio Gallucci , 2010
Educational:
Moving around Languages. Teaching English in the Global Age, संपादक Alessandro Monti, 2009
Carole Rozzonelli, *Teaching and Learning a Foreign Language in the Digital* Age, 2009
Esterino Adami, *Games and Activities in ESL Classroom*, 2009
[2]Alberto Pelissero, *Il riso e la pula. Vie di salvezza nello shivaismo del Kashmir*, 1998
Pinuccia Caracchi, *Ramananda e lo yoga dei Sant*, con una traduzione dei canti hindi in collaborazione con Shukdev Singh, 1999
Alessandro Monti, *The time after cowdust: l'ora del tramonto. Identità di ruolo e identità mitiche tra oriente e occidente*, 2000
Laura Liberale, *I mille nomi di Ganga*, 2003
Alessandra Consolaro, *Madre India e la Parola. La lingua hindi nelle università "nazionali" di Varanasi*, 2003
Racconti hindi del Novecento, traduzione di Pinuccia Caracchi e Stefano Piano, संपादक Pinuccia Caracchi, 2004
Stefano Piano, *Luoghi dei morti (fisici, rituali e metafisici) nelle tradizioni religiose dell'India*, 2005
Laura Liberale, *I Devanamastotra hindi. Gli inni puranici dei nomi della Dea. Un'analisi comparativa*, 2007

एसोसिएट प्रोफ़ेसर प्राध्यापक अल्बेर्तो पेलिस्सेरो (संस्कृत, हिंदू धर्म और दर्शन)
अनुंसधानकर्त्ता और स्थायी सहायक प्राध्यापक अन्तोनेल्ला कोंबा (पाली, तिब्बती भाषा, बौद्ध धर्म और दर्शन)

तोरीनो विश्वविद्यालय में हिंदी पाठ्यक्रम

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। शुद्धता, सहजता, स्वाभाविकता एवं सरसता परिष्कृत भाषा के लक्षण हैं। इसलिए हिंदी पाठ्यक्रम में भाषा (संस्कृत, हिंदी) कौशल अधिगम पर बल दिया जाता है। संस्कृत और हिंदी की कुछ पाठ्य भागों के पाठन व विश्लेषण पर, तुलनात्मक व ऐतिहासिक भाषाविज्ञान पर और भारत के सांस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाता है। हिंदी अध्यापन अनेक सहगामी गतिविधियों से किया जाता है। एक ओर विद्यार्थियों में भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि पैदा करनी है, दूसरी ओर विचारों की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणीयता को स्वतः स्फूर्त बनाना है।

साहित्य की प्रमुख विधाओं में से कविताएं, कहानियां, निबंध, एकांकी, यात्रावृत्तांत, संस्मरण, जीवनी, पत्र आदि पढ़ाए जाते हैं। पाठ्यसहगामी गतिविधियों के अंतर्गत हिंदी अभिव्यक्ति कौशल प्रतियोगिता, एकांकियों का मंचन एवं हिंदी लेखन को प्रोत्साहन दिया जाता है।

जैसा पूरे यूरोप में होता है, आजकल इटली में भी विश्वविद्यालय का अध्ययन तथाकथित "3+2 योजना" के ढांचे से बना है। इसका मतलब है कि तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा करके विद्यार्थी स्नातक डिग्री प्राप्त करते हैं। इस पाठ्यक्रम के अनुसार हिंदी केवल दूसरी विदेशी भाषा के साथ पढ़ी जा सकती है (दो "majors")। तोरीनो विश्वविद्यालय के छात्र और छात्राएं परीक्षा के बिना प्रवेश करते हैं, पर हर वर्ष के अंत में परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों का चयन होता है। आमतौर पर स्नातक स्तर पर 50 विद्यार्थी पढ़ते हैं और स्नातकोत्तर स्तर पर 6–8 अधिस्नातक छात्र और छात्राएं होती हैं।

बी.ए. हिंदी (Laurea triennale)

पहला वर्ष	क्रेडिट	दूसरा वर्ष	क्रेडिट	तीसरा वर्ष	क्रेडिट
इतालवी साहित्य	9	हिंदी भाषा	9	संस्कृत भाषा	9
भाषाविज्ञान	9	दूसरी भाषा	9	हिंदी साहित्य (आधुनिक हिंदी गद्य)	9
हिंदी भाषा	9	हिंदी साहित्य (मध्यकालीन साहित्य)	9	हिंदी फ़िल्मः इतिहास और आलोचना	9
दूसरी भाषा	9	दूसरी भाषा का साहित्य	9	भाषाविज्ञान	9
भारत का सांस्कृतिक भूगोल	9	भारतीय दर्शन और धर्म	9	छात्रों की रुचि का विषय और प्रशिक्षण	12
मानव–शास्त्र	9	अर्थशास्त्र या अंतर्राष्ट्रीय कानून	9	शोध निबंध	9
भारत का इतिहास	9	कंप्यूटर विज्ञान	6		

एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम (Laurea Magistrale)

पहला वर्ष	क्रेडिट	दूसरा वर्ष	क्रेडिट
हिंदी भाषा (अनुवाद अभ्यास, साहित्यिक अनुवाद)	9	हिंदी भाषा (अनुवाद अभ्यास, हिंदी भाषा का इतिहास)	9
दूसरी भाषा	9	दूसरी भाषा	9
हिंदी साहित्य (मध्यकालीन साहित्य)	9	हिंदी साहित्य (आधुनिक हिंदी गद्य, नाटक, काव्य, निबंध आदि)	9
मानव–शास्त्र	9	भारतीय दर्शन और धर्म	9
भारत का इतिहास	9	भाषा विज्ञान	9
छात्रों की रुचि का विषय	9	शोध निबंध	15
प्रशिक्षण	6		

वर्तमान अनुसंधान

तोरीनो विश्वविद्यालय के यूरोपी–एशियाई पी.एच.डी. के विद्यालय (Scuola di Dottorato in Studi Euro-Asiatici) में भारतीय और तिब्बती अध्ययन किया जाता है। इस प्रोग्राम में भारत और तिब्बत की पुरातन, मध्यकालीन और आधुनिक भाषाओं और संस्कृतियों का एवं आंग्ल–भारतीय भाषा और साहित्य का अध्ययन और अनुसंधान किया जाता है। पी.एच.डी. विद्यालय के इंडोलॉजी विभाग का संचालन अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाता है: मिलानो, बोलोन्या, नापोली और कालियरी के विश्वविद्यालय इसमें सहयोगी हैं। अनेक विदेशी संस्थान भी सहयोग करते हैं, जैसे कि जै सोमय भारतीय संस्कृति पीठम् महाविद्यालय (मुंबई), कोलकाता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय (कोलकाता), रबिंद्र भारती विश्वविद्यालय (कोलकाता) और थोड़े दिन हुए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) इन सभी संस्थानों से पारस्परिक समझौता पूरा हुआ है।

हिंदी का वर्तमान अनुसंधान आलोचनात्मक संस्करण, अनुवाद और विश्लेषण पर केंद्रित है। पिनुच्चिया कराक्की और आलेसांद्रा कोंसोलारो ने "A Oriente!" प्रकाशक में "रत्नमाला" स्थापित की है, जो एक द्वैभाषिक शृंखला है, जिसमें आधुनिक भारतीय भाषाओं की कहानियों का मूल रूप एवं इतालवी अनुवाद समीक्षात्मक भूमिका के साथ प्रकाशित होता है। अभी तक तीन पोथियां छपी हैं: आलेसांद्रा कोंसोलारो द्वारा अनूदित चित्रा मुद्गल की "दुल्हिन", प्रेमचन्द का "सेवा मार्ग", जो पिनुच्चिया कराक्की ने अनूदित किया है और कृष्णा सोबती का "ए लड़की", जिसका अनुवाद कियारा काप्रारो (Chiara Capraro) ने किया है। अन्द्रेआ द्रोक्को, जिन्होंने तोरीनो विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है, आजकल मानविकी अध्ययन विभाग के भारतीय अनुभाग में भारतीय आर्य भाषा विज्ञान पर अनुसंधान कर रहे हैं।

इन दिनों इतालवी विश्वविद्यालयों में बहुत बड़े संरचनात्मक परिवर्तन हो रहे हैं और अनुसंधान की आर्थिक सहायता काटी जा रही है, फिर भी मानविकी अध्ययन विभाग में भारत–विद्या तथा हिंदी का अध्ययन–अध्यापन बढ़ाने का पूरा प्रयास किया जाता है।

इटली में आजकल हिंदी जानने का महत्व धीरे–धीरे बढ़ रहा है। हमारे विद्यार्थी हिंदी सीखते हैं, क्योंकि हिंदी भाषा भारत की राजभाषा होते हुए भारत की संस्कृति का दरवाज़ा खोलती है। काव्य, कविता, दर्शन, गीत, इन सबमें उनकी रुचि है। लिखने में, पढ़ने

में, उच्चारण में कोई खास कठिनाई नहीं है इस भाषा में। आजकल तो हिंदीभाषी लोग पूरी दुनिया में रहते हैं, दक्षिण एशिया में ही नहीं, हिंदी मॉरीशस, नेपाल, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण अफ़्रीका, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रचलित है। हिंदी 40 करोड़ से ज़्यादा लोगों की भाषा है। इसके अतिरिक्त, हिंदी पाकिस्तानी राष्ट्रभाषा उर्दू से बहुत मिलती जुलती है, इसलिए और ज़्यादा उपयोगी है। इटली में प्रवासी भारतीय लोगों की संख्या 1 लाख से ऊपर है और आशा है, भविष्य में भारतीय मूल के युवा–वर्ग अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति अधिक उत्साहित होंगे।

आज हिंदी भाषा विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण है। फ़िल्म के क्षेत्र में आजकल यूरोप में भी लोगों को भारतीय फ़िल्मों का बहुत शौक है, खासतौर पर बॉलीवुड फ़िल्म का। हमारे कई विद्यार्थियों की रुचि भारतीय संगीत और नृत्य में है। आज का भारत तो विज्ञान, व्यापार कर्मण्यता, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल माध्यम के लिए बहुत माना जाता है, और विदेशी विनियोग कर्त्ताओं की संख्या बढ़ रही है। इसी कारण इटली के काफ़ी व्यापारिक निगम हिंदी और भारत की संस्कृति से परिचित व्यक्तियों को ही नौकरी देने का प्रस्ताव कर रहे हैं, ताकि उनके उत्पाद हिंदीभाषी मण्डी तक पहुंच जाएं।

इस लेख के अंत में मैं एक विवेचना करना चाहूंगी और एक इच्छा व्यक्त करूंगी। इटली के वर्तमान संदर्भ में भारतीय भाषाओं के अध्ययन–अध्यापन की स्थिति अन्य पूर्वी भाषाओं के सामने काफ़ी कमज़ोर नज़र आती है। चीनी, जापानी और अरबी की तुलना में हिंदी के विद्यार्थियों की संख्या बिल्कुल नगण्य है। कुल मिलाकर चीनी, जापानी और अरबी हिंदी से कई गुणा आगे हैं। चूंकि चीन और भारत आज की एशियाई महाशक्तियां हैं, मैं उनकी तुलना करूंगी। चीन के शिक्षा मंत्रालय द्वारा दूसरे देशों में चीनी भाषा की पढ़ाई का संवर्धन किया जाता है। जिस जिस विश्वविद्यालय में चीनी भाषा का अध्यापन होता है, उस परिसर में कन्फ़्यूशियस इंस्टीट्यूट (Confucius Institute) विद्यमान है। इनका बजट बहुत बड़ा है और इनका मिशन चीनी भाषा और संस्कृति का प्रचार–प्रसार करता है। इनके माध्यम से विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के कारण सैकड़ों शिक्षक चीनी भाषा और संस्कृति से प्रभावित होते हैं। इसकी तुलना में भारत सरकार भाषा–विषय के प्रति उदासीन है। अंग्रेज़ी के मोह ने भारतीय जनमानस को जकड़ रखा है और भारतीय भाषाओं का शिक्षण–प्रशिक्षण भारत में भी कमज़ोर है और दूसरे देशों में भी। इसके अलावा, भारत सरकार के जो आधिकारिक प्रतिनिधि हैं, दूतावास और कौंसलाधीश, वे भी हिंदी अध्ययन–अध्यापन के लिए कोई विशिष्ट सहायता व योगदान नहीं प्रदान करते हैं। विश्व–मंच पर भारत देश के सम्मान्य स्थान के लिए इसका निहितार्थ क्या है, यह एक विचारणीय विषय है। आशा है कि वय्यादोलिद विश्वविद्यालय यूरोपीय हिंदी संगोष्ठी 2012 द्वारा की गई संस्तुतियों पर भारत सरकार अपेक्षित कार्रवाई करेगी।

□□□